प्रश्न- भारतीय समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका हमेशा अग्रणी रही है, परन्तु तथ्य और आँकड़े यह प्रमाणित करते हैं कि उनके सशक्तिकरण की दिशा में संतोषप्रद कार्य नहीं किये गए हैं। इस सन्दर्भ में महिला सशक्तिकरण के विकास के लिए आप कौन-कौन से उपाय सुझाएंगे?

(250 शब्द)

The role of women in the development of Indian society has always been pathbreaking, but the facts and figures proves that no satisfactory work has been done in the direction of their empowerment. In this context what measures would you suggest for the growth of women empowerment?

(250 Words)

मॉडल उत्तर

- प्रारंभ में भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका को बताएं।
- अगले पैरा में महिला सशक्तिकरण की दिशा में हुए प्रमुख कार्यों, जो असफल रहे, को बताएं।
- फिर अगले पैरा में महिला सशाक्तिकरण के विकास के लिए प्रमुख उपायों को बताएं।
- अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

भारत एक पुरुष प्रधान समाज है जहाँ जन्म के आधार पर ही जेंडर असमानता को सामाजिक मान्यता प्राप्त है। यही कारण है कि महिलाओं को 'दोयम दर्जे (Second grade citizen) का नागरिक कहा जाता है। गारो, खासी, नायर जैसे समुदायों को छोड़कर लगभग पूरा भारतीय समाज पितृसत्तात्मकता का अनुसरण करता है। पितृसत्ता श्रम विभाजन एवं जेंडर आधारित भूमिकाओं में भी दिखाई देती है। जिसमें पुरुष घर के बाहर तथा महिलाएँ घरेलू कार्य करती हैं। यह व्यवस्था सदियों से चली आ रही है। 18वीं सदी में औद्योगिक क्रान्ति के दौरान पहली बार महिलाओं को वेतन भोगी (Paid labour) श्रमिक के रूप में स्वीकार किया गया।

1990 के बाद आर्थिक उदारीकरण के कारण निजी क्षेत्रों में भारी रोजगार के अवसर उभरे, जिसके कारण काम-काजी महिलाओं का एक शक्तिशाली मध्यवर्ग उभरा, जो काम-काजी महिलाओं के विरूद्ध हिंसा, यौन शोषण, लैंगिक असमानता (सबरीमाला) आदि के विरूद्ध संघर्ष कर रहा है।

प्रमुख प्रयास, जो कि असफल रहे:-

- पिछले 14 वर्षों से महिला आरक्षण विधेयक का पास न होना।
- लिंगानुपात का 943/1000 होना, (रूस 1140:1000)
- भारत में 50% महिलाएँ एनीमिया से ग्रस्त (रक्त की कमी), जो परवरिश के दौरान खान-पान में होने वाले भेदभाव का परिणाम है।
- समान वेतन अधिनियम के बावजूद अभी तक महिलाओं को समान पारिश्रमिक प्राप्त नहीं हुआ है। जैसे-राष्ट्रीय नमूना

सर्वेक्षण (N.S.S) के अनुसार प्रतिदिन पुरूष 235 रूपये तथा महिलाएँ 160 रूपये पारिश्रमिक प्राप्त करती हैं।

- महिलाओं के विरूद्ध हिंसा पश्चिमी समाजों की तुलना में बहुत अधिक है और भारत युवा महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित देश है।
- विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में (संसद में) मात्र 10.8% महिलाएँ हैं और अगर महिला आरक्षण विधेयक पारित हो जाये तो कम से कम 180 महिलाएँ संसद में हो सकती हैं।

प्रमुख सुझावः-

- महिला आरक्षण विधेयक अविलम्ब पारित हो, क्योंकि शीर्ष पर महिलाओं का होना आवश्यक है जहाँ वो अपने विषयों से जुड़े मामलों पर निर्णय ले सकें।
- माध्यमिक से लेकर उच्चतर शिक्षा तक 'सैन्य कला' (मार्सल आर्ट) महिलाओं के लिए अनिवार्य है। जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़े।
- बिना आर्थिक सशक्तिकरण के अन्य प्रयास परिणाम नहीं दे सकते इसलिए कई ऐसी नौकरियाँ हैं, जिनमें महिलाओं के लिए 50% से 80% तक आरक्षण प्राप्त हो।
- पैतृक संपत्ति में महिलाओं की भागादारी अनिवार्य हो।
- समाज में संवेदनीकरण आवश्यक है और ऐसा शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। बचपन से ही शिक्षा के माध्यम से 'शी फॉर ही' और 'ही फॉर शी' के माध्यम से बच्चों की परिवरिश हो।
- महिलाओं के विरूद्ध गंभीर अपराध की स्थिति में समयाबद्ध न्याय और प्रभावों की आर्थिक क्षतिपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।